मेंढ़बंधी

प्रारंभ में ग्राम के खेतों में मेंढ़बंधी नहीं थी। वर्षा ऋतु में खेंतों में पानी मेंढ़बंधी न होने से सारी मिट्टी को बहाकर ले जाता था। जिससे खेत की उपजाऊ मिट्टी पानी के बहाव के साथ बह जाती थी एवं खेत में उर्वरा शक्ति कम हो जाती थी। इस कारण किसान पर्याप्त फसल नहीं ले पाता था और गर्मी के समय जल स्तर कम हो जाता था। पर्याप्त फसल के न होने से किसान की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर हो चुकी थी। जिससे धान का उत्पादन 10–12 बोरी होता था।

आज वर्तमान में कार्ड एवं नाबार्ड के सहयोग से ग्राम माकरदोना वाटरशेड एवं कुम्हड़ा वाटरशेड के अंतर्गत ग्राम माकरदोना, कांटाकुर्रीडीह, कुकरेल, बनबगोद, कुम्हड़ा के किसानों को कार्ड संस्था के सदस्यों द्वारा ग्राम में जाकर कृषकों को मार्गदर्शन दिया एवं उन्हें खेतों में मेंढ़बंधी के बारे में बताया। ग्राम माकरदोना वाटरशेड अंतर्गत ग्राम कुकरेल के हितग्राही किसान **कृ**

ष्णा पिता गजाधर, शंकर पिता रामा, मेहतरीन बाई पति भरोसा, मानकी पति सुखराम,आदि तथा ग्राम कांटाकुर्रीडीह से हितग्राही किसान **बोधन, रामनारायण, मनराखन, भुखन, रोहित, भागबली, प्यारी/कन्हैया,** आदि किसानों तथा वाट रशेड कुम्हड़ा के ग्राम बनबगोद के हितग्राही किसान **टीकम पिता झरियार, चिन्ता पिता रमउ, गोविन्द पिता समोथी, परदेशी पिता भगोली, दुखुराम पिता उदेराम, दुलारू पिता उदेराम** तथा ग्राम कुम्हड़ा के हितग्राही किसान **कालीराम, कमलनारायण, चंद्रसेन, ठाकुरराम, सुरेश,शंकर आदि** किसानों द्वारा बताया गया कि हमारे खेत में

मेढ़बंधी नहीं थी और सारी उपजाऊ मिट्टी बह जाती थी। इस समस्या के समाधान के लिए कार्ड संस्था के सदस्यों द्वारा मेंढ़बंधी करवाई गई। जिससे खेत की उपजाऊ मिट्टी के बहने की समस्या दूर हो चुकी है।

वर्तमान में ग्राम के लगभग सभी किसानों के यहाँ मेढ़बंधी का कार्य कार्ड संस्था एवं नाबार्ड के सहयोग से किया जा चुका है और किसान आज दोहरी फसल ले रहे है। जिससे उनकी आय में भी वृद्धि हुई है तथा आज किसानों के खेत में प्रति एकड़ लगभग 20-35 क्विंटल धान का उत्पादन हो रहा है।

डबरी

प्रारंभ में बाजरकुर्रिडीह वाटरशेड अंतर्गत ग्राम बाजरकुर्रिडीह, डोंगरीपारा, बरबांधा, पीपरछेड़ी ऊपर पार, पीपरछेड़ी नीचे पारा में अधिकांश भूमि बंजर थी तथा यहाँ पर कोई फसल नहीं होती थी। ग्राम के सभी व्यक्ति कार्य की तलाश में दूसरी जगह जाते थे। जिससे उन्हें पर्याप्त मजदूरी नहीं मिल पाती थी एवं अधिकांश ग्रामवासी बारिश के समय ही फसल ले पाते थे बारिश समाप्त होने के बाद ग्रामीणजनों को गर्मी की फसल के लिए पर्याप्त साधन एवं पानी न होने के कारण फसल लेने में असमर्थ थे।

वर्तमान में कार्ड संस्था के सदस्यों के निरंतर प्रयासों से ग्राम के अधिकांश किसानों को समय-समय पर प्रशिक्षणों के माध्यम से प्रेरित किया एवं आज बंजर भूमि पर डबरी का निर्माण कराया गया। जिससे किसान गर्मी की फसल भी लेने लगा है। डबरी के निर्माण से मछली पालन भी हो रहा है जिससे किसानों को रोजगार प्राप्त हो रहा है।

इसी प्रकार ग्राम डोंगरीपारा के हितग्राही किसान **डोमार, धुरबाई, ईश्वर** आदि के खेंतों में डबरी बनवाई गई। ग्राम पिपरछेड़ी नीचे पारा के हितग्राही किसान **कचरीबाई, बैसाकु,**तथा ग्राम पिपरछेड़ी ऊपर पारा के हितग्राही किसान **दशरू, महादेव** आदि के यहाँ डबरी का निर्माण कार्ड एवं नाबार्ड के द्वारा करवाया गया है। इन ग्रामों के किसान आज दोहरी फसल कर रहे है। जिससे इनकी आय में वृद्धि हुई है।

छोटी डबरी :– बाजारकुर्रिडीह वाटरशेड के अंतर्गत कुछ ग्रामों के किसानों के खेतों में छोटी डबरी का भी निर्माण हुआ है। जिसमें ग्राम बरबाधां के हितग्राही किसान **देवकरण** तथा ग्राम डोंगरीपारा से हितग्राही किसान **खोरबहारा** आदि के यहाँ छोटी डबरी का निर्माण हुआ है। इन ग्रामों के समस्त किसान आज दोहरी फसल ले रहे है और इनके खेतों में मिट्टी के कटाव में भी कमी आई है।

वर्तमान में भी वन भूमि पर 2 खेत तालाब एवं 3 छोटी डबरी का निर्माण किया गया है। जिससे आसपास की वनभूमि पर आने वाले समय में पानी की उपलब्धता बनी रहे। ग्राम डोंगरीपारा के हितग्राही किसान **उत्तम सिन्हा** ने भी अपने खेत में खेत तालाब का निर्माण करवाया है। जिससे वह आने वाले समय में मछली पालन एवं कृषि के लिए इसका उपयोग कर सके। ग्रामवासियों का कहना है कि कार्ड एवं नाबार्ड संस्था के सहयोग से चलाये जा रहे जलग्रहण के कार्य सराहनीय है। जिससे ग्राम में रोजगार के साथ-साथ भू जल के स्तर में भी वृद्धि हुई है।

फॉल

प्रारंभ में जल ग्रहण परियोजना से पहले बारीश के मौसम में पानी की निकासी के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। जिससे पानी के बहाव के कारण मेढ़ टूट जाते थे और किसानों के खेतों की ऊपजाउ मिट्टी बह जाती थी। जिससे फसलों को भी नुकसान होता था तथा पैदावार भी कम होती थी तथा किसान एक ही फसल कर पाता था। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो रही थी तथा उन्हें 10–12 बोरी धान प्राप्त हो रहा था।

वर्तमान स्थिति :-

कार्ड संस्था के द्वारा मेढ़बधान के कार्य के साथ-साथ मेढ पर प्लास्टिक पाईप आऊट लेट लगाने का प्रावधान किया गया। कुछ मेढ़बंधी पर पानी के अधिक बहाव के कारण प्लास्टिक पाईप आऊट लेट की जगह सीमेंट आऊट लेट का निर्माण कराया गया। जिससे पानी से होने वाले मिट्टी के कटाव को रोका गया। फॉल के निर्माण से ग्राम बाजारकुर्रिडीह वाटरशेड के अंतर्गत ग्राम बरबांधा के हितग्राही किसान **बलिराम, सुनाराम, महारजी, अर्जुन, पुरान, आदि** तथा माकरदोना वाटरशेड के अंतर्गत ग्राम कुकरेल **भागीरथी, जनक, हरेश, लक्ष्मण, बरतनीन, अशोक, राजकुमार, शंकरलाल, शिवजी, देहूती, रामचंद्र** आदि हितग्राही किसानों के यहां फॉल का निर्माण कराया गया। फॉल के निर्माण से किसानों को बहुत लाभ हुआ है। उनके खेत की ऊपजाउ मिट्टी का कटाव रूक गया है एवं फसल के उत्पादन में भी वृद्धि हई है। आज किसानों को लगभग प्रति एकड़ 20-25 क्विंटल धान प्राप्त हो रहा है तथा भूमिगत जल स्तर में भी बढ़ेतरी हुई।